Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानस मंथन

शशि पाधा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे बिन आंगन की तुलसी
थोड़ी तो मुरझाई होगी,
हार सिंगार की बेला कोमल
कुछ पल तो कुम्हलाई होगी,

बचपन की उन सखियों को
क्या मेरी याद सताई ?

वीर अर्जुन हैं आदर्श मेरे
उपदेश कृष्ण के संग मेरे ,
शत्रु जितने भी वार करे
माँ की ममता कवच बने ।

नीलम सी साँझ
चाँदी का चाँद,
तारों के दीप
सागर की सीप,
जोड़ी है मैंने तेरे लिए
बस तेरे लिए ।

किस दृढ़ता से लांघ ली तूने
संस्कारों की अग्नि रेखा,
देहरी पर कुछ ठिठकी होगी
छूटा क्या, क्या मुड़ के देखा ?

इसी पुस्तक से—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 4701
Dated 20 12 2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानस मंथन

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंथन

शशि पाधा

मानवी प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

मानस मंथन

कवयित्री : श्रीमती शशि पाधा
प्रकाशक : मानवी प्रकाशन, पंजतीर्थी जम्मू ।
सर्वाधिकार : सुरक्षित
संस्करण : प्रथम, २००७
मूल्य : दो सौ रूपये
मुद्रक : मोनिका ग्राफिक्स, जम्मू ।

MANAS MANTHAN

Poetry by : Smt. Shashi Padha
Publisher : Manvi Prakashan, Panjtirthi, Jammu.
Copyright : All rights reserved
Edition : First, 2007
Rate : Rs.200/-
Rate in US : $15/-
Typesetting : Monika Graphics, Jammu. 094191-43072

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं हिन्दी भाषा की समृद्धि
में संलग्न प्रवासी भारतीयों को समर्पित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आमुख

अपने प्रथम काव्य संग्रह "पहली किरण" के पश्चात् "मानस मंथन" को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

रचनात्मकता माँ सरस्वती का वरदान है । अवचेतन मन के गहरे तल में कब, कहाँ और कैसे अनुभूति एवं कल्पना की द्वन्द्वात्मक लहरों में मंथन होता रहता है और कब वही अन्तर्भाव शब्द रूप हो जाते है, मैं स्वयं नहीं जानती ।

सृजन नारी की सहज वृत्ति है । जीवन के राग-विराग, हर्ष-शोक एवं मानवीय रिश्तों की उहा-पोह ने सदैव मेरे संवेदनशील हृदय में अनगिन प्रश्नों का जाल बुना है। मेरा जिज्ञासु मन इस चराचर जगत में ही उन प्रश्नों के उत्तर ढूढँता रहता है । जीवन मीमाँसा की इसी भावना से प्रेरित हो 'मानस मंथन' का बीज अंकुरित हुआ । इस संग्रह में मैंने एक संवेदनशील नारी हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को गीतों की लड़ियों में पिरोया है ।

सर्वन्दनीय माँ त्रिकुटा की गोद में बसे जम्मू शहर में मेरा जन्म हुआ । इस पर्वतीय क्षेत्र की प्राकृतिक छटा ने बाल्यकाल से ही मुझे काव्य सृजन के लिये प्रेरित किया । प्रकृति ही मेरी कल्पना को सजाती, सँवारती एवं दिशा देती रही । विधि एवं विधाता के प्रत्येक क्रिया-कलाप में मैंने उस अदृश्य चित्रकार से साक्षात्कार की अभिलाषा की है जो पूर्ण ब्रह्माँड को आस-निरास के विभिन्न रंगों से चित्रित करता रहा है ।

विश्व में फैली अशान्ति एवं अराजकता से व्यथित मेरी कल्पना ने जहाँ परम ब्रह्म से शान्ति एवं सहृदयता की प्रार्थना की है, वहीं पर सीमायों के सजग प्रहरी वीर सैनिकों की देशभक्ति एवं गौरव से ओत-प्रोत भावनायों को भी ऋणी भारतीयों तक पहुँचाया है ।

प्रवास की अवधि में मुझे अमेरिका में बसे हिन्दी प्रेमियों से मिलने का अवसर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिला । हिन्दी भाषा एवं साहित्य को परिपक्व करने का वहां अथक प्रयत्न हो रहा है । वहां के साहित्य प्रेमी समय-समय पर काव्य गोष्ठियों के आयोजन एवं विभिन्न पत्र पत्रिकायों के प्रकाशन द्वारा साहित्य साधना में जुटे हैं ।

लगभग दो वर्ष तक मुझे अमेरिका के नार्थ केरोलाइना राज्य के विश्वविद्यालयों के विदेशी भाषा विभाग में हिन्दी भाषा पढ़ाने का सु-अवसर मिला । वहीं पर विश्वविद्यालय से दूरदर्शन के माध्यम से भाषा को हिन्दी प्रेमियों तक पहुँचाने में मेरा योगदान रहा । प्रवास में देश एवं प्रियजनों से विछोह की पीड़ा की अनुभूति भी मेरे संग्रह में रचना बद्ध है ।

लेखन एकान्त साधना है । किन्तु मेरी प्रत्येक रचना मेरे पति मेजर जनरल केशव पाधा की सार्थक आलोचना एवं सराहना के माध्यम से ही वर्तमान स्वरूप तक पहुँची । आभारी हूं मैं उनकी एवं प्रिय सरिता, विवेक, आदित्य, अनिका एँव सौम्या की जिनके स्नेह की फुहार से मेरी कल्पना सदैव सरस रही ।

श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ मैं अपने स्वर्गीय माता-पिता को जिनका आशीर्वाद जीवन के पग-पग पर निरन्तर प्रेरणा स्रोत सा संग रहा ।

मेरे शब्द चित्रों को संग्रह में रूपान्तर करने के लिए धन्यवादी हूँ मैं श्री इन्दु भूषण की जिन्होंने मेरे कवि हृदय में उद्वेलित 'मानस मंथन' को आप तक पहुँचाया ।

शशि पाधा
email : shashipadha@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

श्रीमती शशि पाधा की हिन्दी कविताओं का यह संग्रह अतीत की स्मृतियों और वर्तमान की अनुभूतियों की सुन्दर अभिव्यक्ति करता है । मंथन कविता में वह स्वयं कहती हैं -

मनदर्पण में झांक के मैंने
बीता कल झलकते देखा
किन सपनों की कलियां गूंथीं
क्या क्या कब बिखरते देखा
बीच धार मेरी नाव पड़ी
पतवारों को ढूंढ न पाई ।

नदिया की गोदी में बैठी
'मानसमंथन' करने आई ।

इस मंथन में कभी कवयित्री का बालमन प्रकृति के विभिन्न रूपों में मां की ममता को खोजता है तो कभी यौवन के प्रेमरस में भीगा मन प्रीत की गुहार लगाता है। पुरवाई का झौंका, गुनगुनी धूप, अम्बुआ की डाली के नीचे की परछाई, इन सब में उसे मां का रूप दिखाई देता है ।

अंग अंग को सिहरन देने आई जो पुरवाई हैं
लगता जैसे बरसों बाद मां ही मिलने आई है ।

'प्रेम' कविता का प्रत्येक चरण नाना बिम्बों के माध्यम से प्रेम की परिभाषा देता है और अन्तिम पद्य में निष्कर्ष है-

न रूप न आकार है
अदृश्य निराकार है,
अविरल जीवन स्रोत सा
उपासना की ज्योत सा,
जले जो वही प्रेम है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन के पल मोतियों से हैं जिन्हें प्रेम की राह पर मिलकर चुनने की चाह उन में है । प्रियतम की खोज करते करते वह कहती हैं

जब मन मन्दिर के खुले द्वार
इक महाज्योत की जली ज्वाल,
अन्तर्मन ने मुझे पुकारा,
ढूंढ रही जो छिपा यहां है ।

'मीमांसा' 'मुक्ति बोध' 'जिज्ञासा' जीवन संवाद आदि कविताओं में दार्शनिकता का पुट है । मन को सम्बोधित करते हुए कवयित्री कहती है :-

मैं नश्वर, तू अंश प्रभु का
मैं साधक, तूं साधन मन,
तूं चाहे तो मिल पायेंगे
चिर मुक्ति के हीरक कण ।

जीवन की बगिया में कांटे भी हैं और फूल भी । कवयित्री दोनों का ही महत्त्व समझती है । उनका कथन है :-

कल के सपने आज की पीड़ा, दोनों का ही पलड़ा भारी
मन तराजू थामे बैठा, मन के हाथ ही बात है सारी ।

'रिश्ते' कविता में वर्तमान युग में अपनों द्वारा ही झुठलाये जाते रिश्तों का मार्मिक अंकन है । अपनी भूमि से दूर जा कर प्रवास की पीड़ा की अभिव्यक्ति 'पाहुन' 'प्रवासी सुर' 'मां का आंगन' 'स्मृतियां' आदि अनेक कविताओं में हुए हैं । 'शक्ति' कविता में नारी के सबला रूप की व्याख्या है :-

न मैं सीता जिसे कोई राम त्याग दे,
न मैं द्रौपदी जिसे दाव में हार दे,
न मैं राधा जिसे न ब्याहे कृष्ण,
मैं हू मीरा जो प्रेम का दान दे ।

शशि पाधा मेरी शिष्या रही हैं । उन के इस कविता संग्रह के प्रकाशन पर मैं उन्हें बधाई भी देती हूँ और आशीर्वाद भी क्योंकि यह मेरा सुखद कर्तव्य भी है, अधिकार भी है ।

डा. वेदकुमारी घई
पूर्व प्रोफेसर एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष
जम्मू विश्वविद्यालय, 15.12.2006

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्यमेव जयते

प्रधानमंत्री

PRIME MINISTER

नई दिल्ली
२१ जुलाई, १६६६

प्रिय सुश्री शशि पाधा,

आपका 13 जुलाई, 1999 का पत्र प्राप्त हुआ जिसके साथ आपने अपनी कविताएँ संलग्न की हैं । आपने कविता में साहस और बलिदान की जो भावाभिव्यक्ति दी है, वह सराहनीय हैं । मैं आपके इस प्रयास की प्रशंसा करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

अटल बिहारी वाजपेयी

सुश्री शशी पाधा
गोल्डन ऐरो हाउस
फिरोजपुर कैंट
पंजाब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शशि पाधा के प्रथम काव्य संग्रह 'पहली किरण' का लोकापर्ण भूतपूर्व महाराजा जम्मू कश्मीर डा० कर्ण सिंह के द्वारा सन् २००२ में नई दिल्ली में हुआ । उनके बाएँ हैं सुश्री पद्मा सचदेव एवं शशि पाधा और दाएं हैं आचार्य निशान्त केतु ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

1.	अदृश्य	13
2.	जोगन	15
3.	मीमांसा	17
4.	जिज्ञासा	19
5.	जब भी तेरा नाम पुकारूँ	21
6.	मन वैरागी	23
7.	प्रवासी वेदना	25
8.	मोती से पल	28
9.	तेरे लिए	30
10.	अश्रुमय घन	32
11.	पल दो पल	34
12.	तुम बिन	36
13.	अनुभूति	38
14.	पथिक	39
15.	हौले-हौले	41
16.	धूप-गुनगुनी	43
17.	रिश्ते	45
18.	पल-पल जीवन	47
19.	अजन्मा शैशव	49
20.	मानस मंथन	52
21.	आज मन अधीर है	54
22.	हम लौटें कल या न लौटें	56
23.	अग्नि रेखा	58
24.	पुकार लो	60
25.	अनुनय	62
26.	श्रृंगार	64
27.	धुंधले साये	66
28.	पाहुन	68
29.	जीवन संवाद	70
30.	मुक्ति बोध	72

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

31.	सृजन	73
32.	सुलेखा	75
33.	तुम्हारी बात हुई	77
34.	कामिनी	78
35.	कहाँ है	80
36.	शक्ति	82
37.	संध्या वेला	84
38.	जीवन पर्यन्त	86
39.	गली-गली	88
40.	कैसे भेजूं पाती	90
41.	भेंट	92
42.	ताप	95
43.	काहे मुझसे रूठ गया	96
44.	याचना	98
45.	नीला नीला आसमां	99
46.	छोटी-सी दुनिया	101
47.	सपने	103
48.	एकाकी बादल	105
49.	स्मृतियाँ	106
50.	यादों के गलियारे	109
51.	उस पार	111
52.	अधिकार	113
53.	चन्द्र किरण	114
54.	किस राह पे चली	116
55.	साँझ के साये	118
56.	अन्तर्द्वन्द्व	119
57.	माँ का आँगन	121
58.	प्रवासी सुर	123
59.	प्रेम	126
60.	शत-शत प्रणाम	128
61.	तार से तार मिला लें	130
62.	प्रीत तेरी	132

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अदृश्य

कौन तुम चन्दन से भीगे
साँसों में रम जाते हो ?
कौन तुम मन वीणा के
सोये तार बजाते हो ?
कौन तुम

धरती जब भी पुलकित होती
तेरे कर ने छुआ होगा,
पुष्प पंखुरी जब भी खुलती
अधर तेरे ने चूमा होगा

वायु की मीठी सिहरन में
क्या तुम ही मिलने आते हो,
कौन तुम ओस कणों में
मोती-सा मुस्काते हो ?
कौन तुम ?

मन दर्पण में झाँक के देखूँ
तेरा ही तो रूप सजा है,
नयन ताल में झिलमिल करता
तेरा ही प्रतिबिम्ब जड़ा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरा यह एकाकी मन
क्या तुम ही आ बहलाते हो?
कौन तुम रातों के प्रहरी
जुगनु-सा जल जाते हो ?
कौन तुम

रंग तेरे की चुनरी प्रियतम
बारम्बार रंगाई मैंने
पथ मेरा तू भूल न जाये
नयन-ज्योत जलाई मैंने ।

कभी कभी द्वारे पर आ
क्या तुम ही लौट के जाते हो ?
कौन तुम अवचेतन मन में
स्पन्दन बन कुछ गाते हो ?
कौन तुम ?

ऐसे तुम को बाँधुं मैं
इस बार जो आओ, लौट न पायो,
बन्द करूँ नैनों के द्वारे
चाह कर भी तुम खोल न पायो ।

अनजानी-सी इक मूरत बन
क्या तुम ही मुझे सताते हो ?
कौन तुम पलकों में सिमटे
सपनों-सा सज जाते हो ?
कौन तुम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोगन

मन बनवासी, तन जोगन
अधरों पे नीरव मौन धरे,
जीवन पल यूं झरते जाते
पतझर में यूं पात झरे ।

इच्छाओं की गठरी इक दिन
अनचाहे ही बाँधी मैंने,
अनचाही अनबूझी भी कोई
साध न मन में साधी मैंने ।

मन बिरवा प्यासा मुरझाया
सावन क्यों न प्यास हरे ?

मन चाहे इक पंछी बन कर
दूर गगन उड़ जाऊँ मैं,
जगति से सब बंधन तोड़ूँ
लौट कभी न आऊँ मैं ।

मन तो बस पगला बौराया
मन की पूरी कौन करे ।

सुख और दुःख की कलियाँ गूंथी
जीवन माल पिरोयी मैंने,
आस निरास के रंग भिगोये
तन की डोर डुबोयी मैंने ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधना नित-नित जाल बिछाये
मन पंछी सिमटे सिहरे ।

मन के इस बनवास का जाने
कभी कहीं कोई ठोर तो होगा,
इस जोगन संग अलख लगाये
यहाँ नहीं, कहीं और तो होगा ।

नित सपनों में देखूँ सूरत
आँख खुले तब क्यों बिसरे ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मीमांसा

वेद पुराण सब बांचे मैंने
पढ़ ली सब ग्रन्थों की भाषा,
फिर भी क्यों मैं समझ न पाई
जग में सुख-दुःख की परिभाषा ।

जल बिन्दु से सुख के पल तो
दुःख की रातें लम्बी लगती,
इन्द्रधनु रंग भरता नभ में
कारी बदली आकर ढकती ।

रिमझिम बूँदें बरसा करतीं
पपिहारा किस बूदँ का प्यासा ?
जाने क्यों मैं समझ न पाई
जग में जीने की परिभाषा ।

जिस नभ से सुख के कण बरसे
ओस कणों में वो भी रोये,
पुष्पित करता हरित धरा जो
चुभते काँटे वो ही बोये ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुख-दुःख से कुछ भी तुम चुन लो
नियति ने खेला है पाँसा,
न जाने क्यों समझ न पाई
जीवन क्रीड़ा की परिभाषा ।

नव जीवन का संदेसा ले
वासंती रूत इठलाती आती,
दूर खड़ी तब पतझड़ हंसती
पीत-पात झरती बिखराती ।

मूल तरू कब सूखा करते
कोंपल-सी उगती अभिलाषा,
कैसे फिर भी समझ न पाई
हंसकर जीने की परिभाषा ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिज्ञासा

क्षितिज के उस पार क्या है ?
जानने की चाह है ।

अम्बर का विस्तार क्या है ?
जानने की चाह है ।

रोज सुबह उगता सूरज
किरण जाल बिछाए,
शाम ढले चुपचाप अकेला
सागर में छिप जाए ।

सागर से अपार क्या है ?
जानने की चाह है ।

पंख पसारे उड़ते पंछी
दिशा-दिशा मँडराएँ,
किस अनंत को ढूँढ़े फिरते
धरती पर न आएँ ।

अनंत का विस्तार क्या है ?
जानने की चाह है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँसती-गाती आती मधुऋतु
शाख-शाख हरियाए,
क्यों पतझड़ आता निर्मोही
पात-पात मुरझाए ।

मधुवन का श्रृंगार क्या है ?
जानने की चाह है ।

वीणा की तारों में झंकृत
सात सुरों के गान मिले,
बगिया के फूलों के रंग में
सुख सपनों के प्राण छिपे ।

सपनों का संसार क्या है ?
जानने की चाह है ।

कोई न आया इस जगति में
अजर अमर वरदान लिये,
कर्मों की गठरी धर सर पर
जीवन के दिन चार जिए ।

मुक्ति का आधार क्या है ?
जानने की चाह है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब भी तेरा नाम पुकारूँ

अक्षर-अक्षर फूल हैं झरते
जब भी तेरा नाम पुकारूँ,
दो नयनों में दीपक जलते
जब भी तेरा नाम पुकारूँ ।

नदिया की कल-कल में गूंजे
तेरी ही तो गूंज वो,
पंछी जब कलरव में कूजें
तेरी ही तो कूज वो ।

अधरों पे मोती से पलते
जब भी तेरा नाम पुकारूँ ।

फूल जड़ी तरुवर की डाली
चाह तेरी में झूम रही,
जिस बगिया में वास करे तू
सूर्य किरण वो चूम रही ।

मन वीणा के तार हैं बजते,
जब भी तेरा नाम पुकारूँ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिशा-दिशा में बिम्बित होती
तेरे ही वैभव की लाली,
अभिनन्दन में जलती रहती
अम्बर में दीपों की थाली ।

साँस-साँस में घुँघरू बजते
जब भी तेरा नाम पुकारूँ ।
अक्षर-अक्षर फूल हैं झरते ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन वैरागी !

अब तक था यह मन बैरागी !

अब देख उषा का अरुणाई
इक साध मेरे मन में जागी,
तुम ले आना सिंदूर प्रिय
मैं सूनी मांग सजा लूंगी ।

अब तक था यह मन बैरागी !

मरूथल की तपती परतों में
था डूब रहा निर्मोही मन,
ऋतुयों के सतरंग उत्सव से
अनजान रहा निर्लेपी मन ।

अब देख वासंती तरूणाई
इक साध मेरे मन में जागी,
तुम ले आना वनमाल प्रिय
मैं उलझे केश सजा लूंगी ।

अब तक था यह मन वैरागी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्बर पे अन गिन दीप जले
यह नयन झरोखा खोलें न,
नव चन्द्र बिखेरे धवल छटा
मन चातक कुछ भी बोले न

अब देख चाँद की परछाई
इक साध मेरे मन में जागी,
तुम गाना मेघ मल्हार प्रिय
मैं सोये साज सजा लूंगी ।

अब तक था यह मन वैरागी ।

इच्छाओं के इन्द्रजाल से
तोड़ आई थी बन्धन,
सुधियों की लहरों में मेरे
प्रतिपल होता मंथन ।

अब देख पवन की पुरवाई
इक साध मेरे मन में जागी,
तुम ले आना इस पार प्रिय
मैं स्वप्निल नीड़ सजा लूँगी ।

अब तक था यह मन वैरागी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवासी वेदना

उड़ती-उड़ती सी इक बदली
मोरे अँगना आई,
मैंने पूछा मेरे घर से
क्या संदेसा लाई ?

राखी के दिन भैया ने क्या
मुझको याद किया था ?
पंख तेरे संग बाँध किसी ने
थोड़ा प्यार दिया था ?

दीवाली की थाली में जब
सबने दीप जलाये होंगे,
मेरे हिस्से के दीपों को
किसने थाम लिया था ?

सच-सच कहना प्यारी बहना
क्या तू देख के आई,
उड़ते-उड़ते मेरे घर से
क्या संदेसा लाई ?

मेरी बगिया के फूलों का
रंग बताना कैसा था,
उन मुस्काती कलियों में
क्या कोई मेरे जैसा था ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मेरे बिन आंगन की तुलसी
थोड़ी तो मुरझाई होगी,
हर सिंगार की कोमल बेला
कुछ पल तो कुम्हलाई होगी ?

बचपन की उन सखियों को
क्या मेरी याद सताई ?
मैंने पूछा मेरे घर में
क्या तू देख के आई ?

उड़ते उड़ते क्या तू बदली
गंगा मैया से मिल आई,
देव नदी का पावन जल क्या
अपने आँचल में भर लाई ?

मन्दिर की घंटी की गूंजें
कानों में रस भरती होंगी,
चरणामृत की बूंदें पावन
तन मन शीतल करती होंगी ।

तू तो भागों वाली बदली
सारा पुण्य कमा के आई,
सच बताना प्यारी बहना
किस से मिल के आई ?

अब की बार उड़ो तो बदली
मुझको भी संग लेना,
अपने आँचल की गोदी में
मुझको भी भर लेना ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ममता मूरत मैया को
जब मेरी याद सतायेगी,
देख मुझे तब तेरे संग
वो कितनी खुश हो जायेगी ।

याद करूं वो सुख के पल
तो अँखियां भर भर आई,
उड़ते उड़ते मेरे घर से
क्या संदेसा लाई ?

और न कुछ भी माँगूं तुमसे
बस इतना ही करना,
मेरी मां का आँगन बहना
खुशियों से तू भरना ।

सरस स्नेह की मीठी बूंदें
आँगन में बरसाना,
मेरी बगिया के फूलों में
प्रेम का रंग बिखराना ।

जब जब भी तू लौट के आये
मुझको भूल न जाना,
मेरे घर से खुशियों के
संदेसे लेते आना ।

घड़ी-घड़ी मैं अम्बर देखूं
कब तू लौट के आई,
मेरे घर से प्यारी बदली
क्या संदेसे लाई ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोती से पल

प्रेम नदी का सरस किनारा
आओ पल भर बैठें हम तुम,
कल कल बहती जीवन धारा
कुछ पल संग-संग बह लें हम-तुम ।

थामो मेरा हाथ घड़ी भर
बेला थामे जैसे तरूवर,
साँसों का संगीत सुनो तुम
नेह झरे नयनों से झर-झर ।

अँजुलि में जी भर कर सारा
जीवन मधुरस पी लें हम-तुम ।

रेत कणों को पहने ओढ़ें
आँख मूंद कर सो लें हम-तुम,
कभी गिनें अम्बर के तारे
कभी सुनें लहरों की रूण झुन ।

आयें न यह पल दोबारा
आयो जी भर जी लें हम-तुम ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूर गगन चन्दा मुस्काता
श्वेत चाँदनी बिखरी कण-कण,
मीठी धुन कोई माँझी गाता
पुलकित हो गाता यह तन मन ।

मोती सा संसार हमारा
आओ मिल कर चुन लें हम-तुम ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरे लिये

नीलम सी साँझ
चाँदी का चाँद
तारों के दीप
सागर की सीप
जोड़ी है मैंने तेरे लिये,
बस तेरे लिये ।

कोयल की कूक
झरनों की गूँज
स्वर्णिम-सी भोर
किरणों की डोर
बाँधी है मैंने तेरे लिए,
बस तेरे लिये ।

छेड़े हैं साज
वीणा के राग
सपनों के मीत
सावन के गीत
गाये हैं मैंने तेरे लिये,
बस तेरे लिये ।

केसर की गँध
क्षितिज के रँग
सावन का मेह
आँचल में नेह
ओढ़ा है मैंने तेरे लिये,
बस तेरे लिये ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फूलों का हास
वासंती आभास
चातक की प्रीत
समर्पण की रीत
चाही है मैंने तेरे लिये,
बस तेरे लिये ।

बस तेरे लिये ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अश्रुमय घन

मोती माणक की धरती से
मांगे केवल सुख के क्षण
क्यों पीड़ा हो गई जीवन धन ?

निशि तारों की लड़ियां गिन-गिन
अनगिन रातें बीत गईं
भोर किरण की आस में मुझ-
विरहन की अँखियां भीज गईं ।

कह दो न अब कैसे झेलूँ
पर्वत जैसे दूभर क्षण,
क्यों पीड़ा हो गई-जीवन धन ?

स्वप्न लोक आलोक खो गया
रात अमा की लौट के आई,
पतवारों सी प्रीत थी तेरी
मझदारों में छोड़ के आई ।

नयनों में प्रतिपल आ घिरते
सजल, सघन, अश्रुमय घन,
क्यों पीड़ा हो गई-जीवन धन ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नियति का लेखा मिट न पाया
अश्रुजल निर्झर बरसाया,
निश्वासों के गहन धूम में
अँधियारा पल-पल गहराया ।

अन्तर के अधरों पे मेरे
मौन बैठा प्रहरी बन,
क्यों पीड़ा हो गई-जीवन धन ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पल दो पल

जीवन के दो चार पलों में
पल दो पल ऐसे चुन लायें,

रिमझिम मेघा बरसे जैसे
बूँद-बूँद नेहा बरसायें ।

सागर की लहरों को देखो
दौड़ किनारे मिलने आतीं,
रेतीली तपती धरती को
गले लगा शीतल कर जाती ।

हम भी क्यों न सागर जैसे
लहर-लहर में प्रेम बहायें ।

तरूवर की डाली को देखो
जलती तपती धूप सहे,
झुक-झुक कर धरती को चूमे
ठंडी-ठंडी छाँव करे ।

प्रेम से हम भी छू लें सबको
स्नेह़ भीगा आँचल फैलायें ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्यामल तन कोकिल को देखो
कटु वचन वो भी न बोले,
मीठे सुर में गीत सुना कर
कानों में मधु रस ही घोले ।

रूप रंग तो बाहरी चोला
अंतर्मन सींचें सरसायें ।

ढाई अक्षर का मंतर देकर
गूढ़ बात कह गये कबीरा,
प्रेम रंग में रंग कर देखो
पत्थर भी लगता है हीरा ।

मीरा पीकर जोगन हो गई
स्नेह सुधा बाँटें बिखरायें ।

पल पल जीवन घटता जाता
बीता कल फिर लौट न आता,
हर पल के कर्मों का लेखा
समय लेखनी लिखता जाता ।

जीवन के कागज़ पर हम भी
प्रेम के अक्षर लिख कर जायें ।
रिमझिम मेघा बरसे जैसे
बूँद-बूँद नेहा बरसायें ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम बिन

तुम बिन नीरस मोरा जीवन !
स्नेह वारिद बरसा दे इतना
भीजे, सरसे कोमल तन ।

सावन की रुत आते आते
मोरा पथ क्यों भूल गई,
पल-भर देखी मधुर चाँदनी
अमा नयन की शूल भई ।

केसरिया खुशबु बिखरा दो,
सुरभित हो यह अर्न्तमन ।

इन्द्रधनु से सतरंग सपने
इन नयनों में घिर घिर आयें,
मलयाचल के शीतल झोंके
झुलसे मन की प्यास बुझायें ।

श्वास-श्वास में भरे दो मेरे
सात सुरों की मीठी गुंजन ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिर प्रतीक्षित क्षण की सुधियां
जीवन में उन्माद भरे,
भावी सुख की कल्पित निधियां
अंग-अंग में गान करें ।

स्वप्निल आशाओं की रुनझुन,
प्राणों में भर देती सिहरन ।

स्नेह वारिद बरसा दे इतना
भीजे, सरसे कोमल तन ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुभूति

अतीत की गहराइयों में यूँ जा रही हूँ
रोक लो मुझे, मैं तुमसे दूर होती जा रही हूँ।

सुख की अनुभूतियाँ झर रही हैं फूल सी
छल की विस्मृतियाँ चुभ रही हैं शूल सी।
बीन लो मुझे, मैं स्वप्न सी बिखरती जा रही हूँ
रोक लो मुझे, मैं स्वप्न सी बिखरती जा रही हूँ।

निश्वासों से भीगी रहती मेरे अधरों की मुसकान
दो नयनों में घिर-घिर आई पीड़ा पाहुन सी अनजान।
सुख-दुःख के पुष्प हार सुधियों में पिरोती जा रही हूँ
रोक लो मुझे, मैं तुमसे दूर होती जा रही हूँ।

प्राण वीना मौन मेरी, मौन है संगीत मेरा
क्षीण आस ज्योत है, दूर है मन मीत मेरा।
चिल मिलन का प्रेम पथ, अश्रुओं से धोती जा रही हूँ
रोक लो मुझे मैं तुमसे दूर होती जा रही हूँ।

कैसा बंधन कैसी पीड़ा, जाने कैसा यह संसार
विरह मिलन हैं कूल दो, जग सिंधु है अपार।
थाम लो पतवार, मैं लहरों में बहती जा रही हूँ
रोक लो मुझे मैं तुमसे दूर होती जा रही हूँ।

ज़िंदगी की उलझनों में यूँ उलझती जा रही हूँ
रोक लो मुझे, मैं तुमसे दूर होती जा रही हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पथिक

कौन पथिक है आने वाला ?

छिपने लगी अमा की रात
अरुणाई से रंजित प्रात,
सुरभित मलयाचल की वात
शाख-शाख पे सजते पात ।

पंछी भी कुछ गाने वाला,
कौन पथिक है आने वाला ।

पुष्पों ने गूंथी है माल
खिली-खिली इतराती डाल,
किरणों ने बिखराया जाल
केसर से शोभित हर भाल ।

हृदय कुसुम खिल जाने वाला,
अपना ही कोई आने वाला ?

अंग-अंग में है नव स्पन्दन
साँस-साँस में मिश्रित चन्दन,
अँखियों में इक छवि अतिरंजन
अधर-अधर करते अभिनन्दन ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन खोई निधियाँ पाने वाला
कौन पथिक है आने वाला ?

सुधियों में कोई छाने वाला,
अपना ही कोई आने वाला ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हौले-हौले

इच्छाओं के पंख लगा
मन डोले हौले-हौले ।

न बाँधे कोई बंधन बाधा
न कोई रीत कुरीत,
चंचल पंछी उड़ उड़ जाये
ढूंढे अपना मीत ।

सुख सपनों के साज बजा,
मन गाये हौले-हौले ।

बादल की नैया पर बैठा
धरती पर्वत घूम रहा,
इन्द्रधनु के सतरंग झूले
धीमे-धीमे झूल रहा ।

किरण सुनहरी जाल बने
मन बँधता हौले-हौले ।

नव कलिका का चूम के आनन
भंवरा मन मंडराया,
मधुर-मधुर पराग से भीगा
मन्द-मन्द मुसकाया ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुष्पों की पाँखों में छिप
मन हँसता हौले-हौले ।

नदिया की कल-कल में गूंजे
मेरे मन के गीत,
चंदा की किरणों से छलके
पल-पल मेरी प्रीत ।

निशी तारों से माँग सजा
मन नाचे हौले-हौले ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धूप गुनगुनी

आज भोर से आंगन में
धूप गुनगुनी छाई है,
लगता जैसे मेरी माँ
मुझसे मिलने आई है ।

सूर्य किरण ने चूम के पलकें
सुबह-सुबह जगाया था,
धीमे-धीमे खोल के खिड़की
रंग स्वर्णिम बिखराया था ।

शीतल मन्द पवन छुए जो
आँचल क्या वो तेरा है ?
नीले अम्बर में बदली-सा
स्नेह तेरे का घेरा है ।

अंग-अंग को सिहरन देने
आई जो पुरवाई है,
लगता जैसे बरसों बाद
मां ही मिलने आई है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरी दोपहरी में अम्बर से
बिन बदली ही मेह झरा,
खाली-सी थी मन की गगरी
किसने आकर नेह भरा ?

आँगन में तुलसी का बिरवा
धीमे-धीमे डोल रहा,
सौगातों से भरी पिटारी
धीरे से कोई खोल रहा ।

अम्बुआ की डाली के नीचे
बैठी जो परछाई है,
लगता जैसे दूर देस से
माँ ही मिलने आई है ।

देख न पाती माँ मैं तुमको
फिर भी तुम तो यहीं कहीं,
आँगन में या बगिया में हो
कलियों में तुम छिपी कहीं ।

एक बार भी दिख जाती तो
जी भर तुमसे मिल लूं माँ,
नयनों में भर सूरत तेरी
इन पलकों को मूँद लूं माँ ।

जानूं मैं तू यही कहेगी
माँ भी कभी पराई है ?
फिर क्यों लगता बरसों बाद
तू मुझसे मिलने आई है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिश्ते

कोहरे में धुँधलाये रिश्ते !

बड़े यत्न से बड़ी लग्न से
मन आँगन में बीजा मैंने,
अन्तर्मन सागर से उमड़े
स्नेह वारिद से सींचा मैंने ।

कौन दिशा से आया पतझर,
पल भर में मुरझाये रिश्ते ।

इन्द्रधनु से माँगे सतरंग
बड़े प्यार से घोला-जिनको,
माणक मणियाँ देकर मैंने
प्रेम तराजू तोला जिनको ।

समझ न पाई भेद रंगाई,
कच्चे रंग रँगाये रिश्ते ।

सीपी से चुन-चुन कर मोती
रिश्तों की इक माल बनाई,
मर्यादा का धागा बाँधा
विश्वासों की गाँठ लगाई,

टूटी क्यों वो पावन डोरी
अपनों ने झूठ लाये रिश्ते ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अहं की ऊँची दीवारों को
तोड़ सके तो देखे कोई,
मन के टूटे तारों को जो
जोड़ सके तो देखे कोई ।

अपनों में न मिल पायें तो
कहाँ कोई बनाये रिश्ते ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पल-पल जीवन

मैं पल-पल जीवन जीती हूँ ।

रात बुने जो स्वप्न सुनहले
ओस कणों संग घुलते रहते ।
कल-कल बहते जीवन के पल
काल चक्र में मिटते रहते ।

मैं बीते कल की यादों को,
हृदय पटल में सीती हूँ ।
मैं पल-पल जीवन जीती हूँ ।

आने वाले कल की बात
चाहूँ भी तो जान न पाऊँ,
कहां खो गया बीता काल
ढूँढूं भी तो खोज न पाऊँ ।

मैं जीवित क्षण की अमृत धारा
इन अधरों से पीती हूँ ।
मैं पल-पल जीवन जीती हूँ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन और मुक्ति के बीच
सेतु बन रहती इक आस,
कभी, कहीं किसी दिशा से
पाऊँ चिर सुख का आभास ।

स्वाति की बूंदों को तरसे,
प्यासे मन की प्रीती हूँ ।
मैं प्रति पल जीवन जीती हूँ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजन्मा शैशव

विदा की अन्तिम बेला में मां
पूछूं तुमसे एक सवाल,
अजन्मी तेरी बिटिया नन्हीं
क्यों छीने तुमसे महाकाल ?

अभी न देखे चंदा सूरज
न पंछी, न डार,
अभी न देखे ऋतुओं के रंग
न रिमझिम फुहार ।

अभी न खेली गुड़िया गुड्डा
न कोई तीज त्यौहार,
अभी न देखी सूरत तेरी
अभी न पाया प्यार ।

नन्हें नन्हें अंग हैं मेरे
हैं गिने चुने कुछ श्वास,
बंद अँखियों में पाया मैंने
स्नेह का लघु आभास ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे बनाया कन्या तो मां
मेरा क्या है दोष,
अजन्मे ही मेरे होने पर
क्यों सबको है इक रोष ।

विधि ने जो स्वरूप दिया
क्यों सबको न स्वीकार ?
मेरी नन्हीं जान क्या जाने
क्या चाहे ये संसार ?

मुझे मिटाने की चर्चा जब
तेरे घर में होती,
सत्य बताना मां तू तब
क्या तेरी ममता रोती ?

गर मैं होती बालक तो क्या
तू भी हामी भरती ?
नन्हीं सी यह जान बचाने
नाना यत्न न करती ?

किसने किया विवश तुझे मां
किसने किया प्रहार,
जिन हाथों का काम सृजन
वो क्यों करते संहार ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं तो थी इक प्रेम का अंकुर
पर स्नेह से हूं अनजान,
अजन्मे शैशव की पीड़ा क्यों
कोई न पाया जान ?

जीवन का वरदान जो पाती
सब को खुशियां देती,
कोख तेरी में पलती बढ़ती
मैं तेरे जैसी होती ।

तेरी ममता की छाया थी
कितनी प्यारी-प्यारी,
लघु जीवन का वरदान दिया
हूँ इसकी मैं आभारी ।

जहां से आई वहां चली
ले मन में इक विरानी
कभी-कभी याद तू करना
माँ मेरी लघु कहानी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानस मंथन

जीवन सांझ ढलने को आई !

थमी थमी हर साध की नदिया
झलक रही अपनी परछाई ।

यादों का निर्झर कल कल बहता
आँचल मन का सींचा रहता,
अश्रुघन अंखियों में बसते
भीगा भीगा तन भी रहता ।

अंजुलि भर जीवन जल पी लूं
सुधियों ने गागर छलकाई ।

मन दर्पण में झाँक के मैंने
बीता कल झलकते देखा,
किन सपनों की कलियां गूंथी
क्या-क्या कब बिखरते देखा ।

बीच धार मेरी नाव पड़ी
पतवारों को ढूंढ न पाई ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल-कल बहती धारा के संग
चंचल मन भी बहता आया,
दूर खड़ा किनारा मुझको
संकेतों में कुछ कहता आया ।

नदिया की गोदी में बैठी
मानस मंथन करने आई ।

सागर कितना दूर सखि री
कितना मुझको चलना होगा,
थाम कभी या छोर हवा का
बदली से जा मिलना होगा ।

अंत पड़ाव कहाँ पर होगा,
भावी क्या मैं जान न पाई ।
जीवन साँझ ढलने कोई आई ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज मन अधीर है

आज मन अधीर है !

कांपती कोमल धरा अब
मन में गहरी पीर हैं ।

कान मेरे सुन रहे हैं
शोर चीत्कार आज,
आँख खोलूं तो मैं देखूं
संहार हाहाकार आज ।

शांति के देवता के
पाँव में जंजीर है ।

हरित धरा की ओढ़नी
रक्त रंजित मत करो,
खेलना है रंग से तो
प्रेम का ही रंग भरो ।

आज जन जन हृदय में
विंध गया है इक तीर है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन्म पाया जो मनुज का
प्रेम का प्रसार कर,
खो न दे विवेक ज्ञान
न कोई प्रहार कर ।

आज धरती के नयन में
वेदना का नीर है ।
आज मन अधीर है !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम लौटें कल या न लौटें

ए हिमालय की सर्द हवाओ !
इक संदेश मेरा पहुँचा देना,
है देश सुरक्षित इन हाथों में
यह बात उन्हें बतला देना ।

वीरत्व सुना था लोरी में
अमरत्व मिला था झोली में,
*ज़ोरावर ने जो रणघोष किए
वो गूँज रहे हर टोली में ।
अब लोहा लेना दुश्मन से
यह बात उन्हें बतला देना ।

रग-रग में माँ का दूध मेरे
साँसों में खेत की गंध मेरे,
जन-जन का स्नेह संग मेरे
बाँधी जो हाथ में बहिनों ने,
राखी का धर्म है याद मुझे
यह बात उन्हें बतला देना ।

* जनरल ज़ोरावर -१८३४ में कारगिल एवं लद्दाख में विजय प्राप्त करने वाले वीर सेनापति ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम सीना ताने बढ़ते हैं
जयघोष देश की करते हैं ।
सब भूख-प्यास भुलाकर हम
अब सीमा रक्षा करते हैं,
शत्रु के लिए महाकाल बनें
यह बात उन्हें बतला देना ।

वीर अर्जुन हैं आदर्श मेरे
उपदेश* कृष्ण के संग मेरे ,
शत्रु जितने भी वार करे
माँ की ममता कवच बने ।
संग देश का आशीर्वाद मेरे
यह बात उन्हें बतला देना ।

हम लौटें कल या न लौटें
न आँच तिरंगे पर आएगी ।
इस मातृभूमि के चरणों में
चाहे जान हमारी जाएगी,
है अमरत्व का वरदान मुझे
यह बात उन्हें बतला देना ।

* हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महिम् ।
तस्मात् उतिष्ठ् कौन्तेय युद्धाय कृत् निश्चयः ।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्नि रेखा

कुछ तो कह के जातीं तुम !

अनगिन प्रश्न उठे थे मन में
उत्तर रहे अधूरे,
मरूथल में पद चिन्हों जैसे
स्वप्न हुए न पूरे ।

उलझी जिन रिश्तों की डोरी
थोड़ा तो सुलझातीं तुम
कुछ तो कह के जातीं तुम !

किस दृढ़ता से लाँघ ली तूने
संस्कारों की अग्नि रेखा,
देहरी पर कुछ ठिठकी होंगी
छूटा क्या, क्या मुड़ के देखा ?

खुला झरोखा रखा बरसों
जाने को आ जातीं तुम ।
कुछ तो कह के जातीं तुम !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकाँक्षाओं का पर्वत ऊँचा
चढ़ते-चढ़ते सोचा क्या,
जिस धरती पर पली बढ़ी,
उस जननी का सोचा क्या ?

ममता की उस गोदी का
मान तो रख के जातीं तुम !
कुछ तो कह के जातीं तुम !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुकार लो

रूठी है मेरी जिन्दगी
कोई ज़रा पुकार लो,

अँग से लगा उसे
कोई ज़रा दुलार दो ।

दूर गर निकल गई
तो लौट फिर न आएगी,
तोड़ के बन्धन सभी
जाने कित खो जाएगी ।

रोक लो ज़रा उसे,
प्रीत की गुहार दो ।

धूप-सी खिली कभी
छाँव क्यों ढल गई,
लहर-लहर बही कभी
आज क्यों थम गई ।

ढूंढ लो ज़रा उसे
भवंर से उभार लो ।

फूल-सी कोमल है वो
देखना कुम्हलाये न,
अधर से चूमना उसे
नेह बिन मुरझाये न ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सींच दो ज़रा उसे
सावनी फुहार दो ।

पूछ लो ज़रा उसे
कौन बात चुभ गई,
आस दीप सी जली
आज क्यों बुझ गई ।

थाम लो ज़रा उसे
आँख भर निहार लो !

कोई ज़रा पुकार लो !
कोई ज़रा दुलार दो !
प्रीत की गुहार दो !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुनय

गीत कौन सा गाऊँ मैं
कैसे तुझे रिझाऊँ मैं ?

स्वर माला की लडियाँ बुनते,
युग कितने ही बीत गए,
मन वीणा की तारें छेड़ें
आस-निरास के गीत नये ।

मन आँगन की देहरी पर,
कैसा दीप जलाऊँ मैं ?

बदली के झीने आँचल में
तेरी मोहक छवि मुस्काये,
झिलमिल करते तारक गण में
मुझे सताने क्यों छिप जाए ।

मैं नदिया तू सागर प्रियतम
किस विध तुझको पाऊँ मैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुधियों में तुम रहते हर पल
नयनों से क्यों दूर भये,
जन्म-जन्म का बंधन बांधा
निर्मोही क्यों भूल गए ?

विरह ने जो अग्न लगाई
कैसे उसे बुझाऊँ मैं ।
गीत कौन सा गाऊँ मैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रृंगार

चाँद मद्धम, रात मद्धम
रात की हर बात मद्धम ।

नभ की नीली नीलिमा में
दीप झिलमिला रहे,
काँपते अधर धरा के
गीत गुनगुना रहे ।

सुर मद्धम, ताल मद्धम
बज रहें हैं साज मद्धम ।

अंग-अंग छू रही है
मंद-मंद यह पवन,
दिशा-दिशा निहारते
अनुराग से भीगे नयन ।

मेघ मद्धम, मल्हार मद्धम
है वसंत की बहार मद्धम ।

धरा की नर्म सेज पर
बिछी है पुष्प पँखुड़ी,
ओढ़ ली है रात ने
नव ओढ़नी तारों जड़ी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंग मद्धम, राग मद्धम
है रात का श्रृंगार मद्धम ।

चाँद छूने को चली
उमंग से सिंधु लहर,
धरा का रोम रोम आज
जी रहा है यह प्रहर ।

आस मद्धम, हास मद्धम
है रूप का विलास मद्धम ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुँधले साये

यादों के धुँधले सायों में
तुम चुपके से यूं आते हो,

पतझड़ की सूखी डाली को
यूं मिलने सावन आता है ।

याद मुझे वह अब तक शाम
नभ में था केवल इक तारा,

पेड़ों के घनेरे झुरमुट में
गीत सुना मैंने इक प्यारा ।

मन की गहरी परतों में
वह धुन सुरीली रखी है,

अँखियों के बन्द झरोखों में
वह शाम सहेज़ी रखी है,

कभी कभी उस गीत की लड़ियाँ
मेरा मन भी गाता है ।

न देखा था इन नयनों से
न मन से मन की बात हुई ,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुपचाप बीत गया था दिन
चुपचाप कहीं वो रात गई,

प्रीत ने कहना चाहा कुछ
अधरों ने क्यों रोक लिया ?

मन की बात रही मन में
लाज ने मन को टोक दिया,

याद करूँ तो विरही मन
अनजाने ही भर आता है ।

कभी-कभी मैं देखा करती
नभ का वह एकाकी तारा,

इक सिहरन तन में उठती
अविरल बहती अश्रुधारा ।

जब कभी भी मैं देखा करती
पेड़ों का घनेरा झुरमुट मैं,

बन्द कर लेती आँखें मन की
मिल लेती तुम को चुपचुप मैं ।

कभी-कभी वह बीता कल
मुझे अपने पास बुलाता है ।

पतझड़ की सूखी डाली को
यूं मिलने सावन आता है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाहुन

भीनी भीनी खुशबु का
झोंका सा कोई लाया है
आज कौन देश से आया है ?

तुम आये तो लगता जैसे
फूलों में नव रंग भरा,
झूम उठी यह तन की डाली
मन नाचे उमंग भरा ।

नयनों के गहरे सागर में
कोई चँदा बन लहराया है
आज कौन देश से आया है ?

नीरव वीणा की तारों ने
छेड़ी प्रीत भरी इक तान,
मधुर रागिनी बन कर गूँजा
मौन अधरों पे मृदु गान ।

बंधन बार बंधे कलियों के
चन्दन द्वार सजाया है
आज कौन देश से आया है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तारक दीप जला कर रजनी
पंथ तेरा आलोकित करती,
मलयाचल की सुरभित वायु
तन-मन को आनन्दित करती ।

नयी नवेली धरती को
सूरज ने अँग लगाया है
आज कौन देश से आया है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन संवाद

मेरे मन ने धीरे-धीरे
मुझको कितनी बार कहा,
क्यों रहतीं तुम गुमसुम इतना
मन की अपनी पीर बता ।

हर पल को तुम जी लो इतना
जैसे दूजा दूर कहीं,
किसने देखी कल की बात
सुख के पल तो यहीं-कहीं ।

क्या जाने कब कौन दिशा से
अंधियारी कोई काली आये,
तेरी खुशियों की यह घड़ियां
अपने संग उड़ा ले जाये ।

कितना सुख और कितना दुःख
नियति ने सब लिखा विधान,
कौन पढ़े हाथों की रेखा
छिपी कहीं भावी अनजान ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे इस उपकारी मन ने
मुझको बारम्बार कहा,
छेड़ो मन के तार सुरीले
जीवन का संगीत सुनाओ ।

मैंने मन से पहली बार
धीमे से इस बार कहा,
मन हंसता तो जग भी हंसता
मन में ही सुख- दुःख भी बसता ।

मन को कोई ताप छुए तो
कोमल तन काँपे कुम्हलाये,
हर्षित मन के गहरे तल में
तन सरसिज सा खिल जाये ।

मैं नश्वर, तू अंश प्रभु का
मै साधक, तुम साधन मन,
तू चाहे तो मिल पायेंगे
चिर मुक्ति के हीरक कण ।

तू ही दुःख की सीमा रेखा
तू ही तो सुख का आधार,
संग सदा तुम रहना मेरे
करना मुझ पर यह उपकार ।

तेरा मेरा पावन बन्धन
ऐ मेरे अनुरागी मन,
तुझसे ही संगीत सुरीला
तू ही मेरा जीवन धन ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्ति बोध

करें अब चलने की तैयारी !

साध नहीं कुछ शेष
और न मन में लेश,
जाना है उस पार हमें
अब पहने नूतन वेष ।

हुई कर्मों की गठ भारी
करें अब चलने की तैयारी ।

झरे तरू के पात
शिथिल हुआ अब गात,
दिवस बिताया मोह जाल में
अन्त हुई अब रात ।

विधना की गति न्यारी,
करें अब चलने की तैयारी ।

हो मुक्ति का अब बोध
न बन्धन न अवरोध,
परम ब्रह्म से मिलने का
परम है मन में मोद ।

कोई विदा का गीत सुना री
करें अब चलने की तैयारी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सृजन

जब रिमझिम हो बरसात
और भीगें डाल ओ-पात,
जब तितली रंग ले अँग
और फूल खिलें सतरंग ।

जब कण-कण महके प्रीत,
तब शब्द रचेंगे गीत ।

जब नभ पे हंसता चाँद
और तारे भरते माँग,
जब पवन चले पुरवाई
हर दिशा सजे अरुणाई ।

जब मन छेड़े संगीत,
तब शब्द लिखेंगे गीत ।

जब पँछी करें किलोल
लहरों में उठे हिलोल,
जब धरती अम्बर झूमें
और भंवरे कलिका चूमें ।

जब बन्धन की हो रीत,
तब शब्द बुनेंगे गीत ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब कोकिल मिश्री घोले
पपिहारा पिहु-पिहु बोले,
कोई वासंती पाहुन आये
नयनों से नेह बरसाये ।

जब संग चले मनमीत,
तब शब्द बनेंगे गीत ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुलेखा

ढलते सूरज की आभा में
मां का सुन्दर चेहरा देखा ।

सागर की लहरों को देखे
मन ही मन मुस्काई ऐसे,
मैंने तो उस पार है जाना
मन की बात सुनाई जैसे ।

अस्ताचल पर क्षण भर बैठी
क्षीण वर्ण, सुनहरी रेखा ।

चंपई रंग की चुनरी ओढ़े
ध्यान मग्न वो चलती जाती,
नयन ताल के गहरे तल में
धुँधली लौ सी जलती जाती ।

मोह जाल के बंधन तोड़े
भोग लिया कर्मों का लेखा ।

उस असीम की सीमा में ही
तेरा अन्तर्धान होगा,
परम पिता के चरणों में
आधि-व्याधि का समाधान होगा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे मानस पटल पर अंकित
चित्रमयी सुरेखा ।

उस पार खड़े पिता पुकारें
कैसे तू रुक जाये ?
महाज्योत की लौ में तू भी
ज्वाला-सी मिल जाये ।

इन अंखियों से महामिलन वो
कैसे हो अनदेखा ?

ढलते सूरज की आभा में
मां का सुंदर चेहरा देखा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी बात हुई

आज फिर तुम्हारी बात हुई !

धरती ने अम्बर से कहा,
अम्बर ने सागर से कहा,
सागर ने बादल से कहा,
रिमझिम की बरसात हुई,
फिर से तुम्हारी बात हुई ।

पंछी ने वायु से कहा,
वायु ने पर्वत से कहा,
पर्वत ने ऋतुयों से कहा,
धरती पुलकित गात हुई,
क्या फिर तुम्हारी बात हुई ?

बगिया ने कहा, कलियों ने सुना,
कलियों ने कहा, खुशबु ने सुना,
खुशबु ने कहा, भंवरों ने सुना,
गीतों की सौगात हुई,
फिर से तुम्हारी बात हुई ।

अँखियों ने कहा अँखियों ने सुना,
चिर बन्धन की रात हुई,
फिर से तुम्हारी बात हुई ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामिनी

राग भर दो स्वर में मेरे
मैं विरह की रागिनी हूँ,
बाँध लो प्रणय से मुझको
मैं अथक प्रवाहिनी हूँ ।

गान मेरी वेदना का
क्या कभी तुम जान पाए ?
आस ने तुझको पुकारा
अनजान से पर तुम न आए ।

गीत गाऊँ कौन-सा मैं
कौन छेड़ूँ सुर सुरीले,
दीप-से बुझने लगे हैं
हार कर नयना हठीले ।

मौन प्रीत साधना है
चिर मिलन की कामिनी हूँ ।

संग जलती रात मेरे
नभ की चंचल तारिकाएँ,
गूँजने लगती हैं तेरे
नाम से चारों दिशाएँ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढूँढ़ती फिरती चकोरी
किस गुहा में खो गया है,
ओढ़ काले बादलों को
चाँद जैसे सो गया है ।

चंद्र रश्मियाँ सजा लो
मैं मिलन की यामिनी हूँ ।

मेघ बन आकाश में
उड़ रही हैं कल्पनाएँ,
थिरकने लगी हैं उर में
मोरनी-सी कामनाएँ ।

नूपुरों में है छलकता
प्रेम सिक्त हास तेरा,
पुष्प शोभा में बिखरता
आस का आभास मेरा ।

नेह की कलियाँ बिछा दो
मधुमास की मैं मालिनी हूँ ।

बाँध लो प्रणय से मुझको
मैं अथक प्रवाहिनी हूँ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहाँ है

अपने घर से कितनी दूर
जहां गई दृष्टि की सीमा,
खुला खुला आकाश देखा
और धरती की सीमा रेखा ।

तब पूछा चहुँ दिशायों से
नभ की अनन्त सीमायों से,
छिप जाऊँ जिसकी गोदी में
आँचल का विस्तार कहाँ है ?

हिम की उजली चादर ओढ़े
पर्वत कई दमकते देखे,
जल की गगरी सर पर रखे
बादल कई छलकते देखे ।

शीतल मन्द पवन से पूछा
बदली की रिमझिम से पूछा,
जीवन का संताप हरे जो
शीतल वो तुषार कहाँ हैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरा-भरा धरती का आँगन
सतरंगी ऋतुओं का घर,
खिली-खिली वासंती बगिया
गुंजित हैं कोकिल के स्वर ।

मुसकाती धीर धरा से पूछा
रंग भरी बगिया से पूछा,
तन को मीठी सिहरन दे
वासंती वो बहार कहाँ है ।

धरती अम्बर पर्वत सागर
सूरज चंदा तारे बादल,
समझ सके न मेरी भाषा
बूझे न मन की जिज्ञासा ।

तब मन मन्दिर के खुले द्वार
इक महा ज्योत की जली ज्वाल,
अन्तर्मन ने मुझे पुकारा
ढूँढ रही जो, छिपा यहाँ है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शक्ति

न समझे मुझे अब कोई निर्बला,
शक्ति रूपा हूँ, नारी हूँ मैं वत्सला ।

कोमलाँगी हूँ, अबला न समझे कोई
न धीरज की सीमा से उलझे कोई,
मन की कह दूं तो पत्थर पिघल जायेंगे
चुप रहूँ तो विवशता न समझे कोई ।

अपने कंपन से पर्वत कंपा दूंगी मैं,
शीत झरनों में अग्नि लगा दूंगी मैं,
आज सूरज को दीपक दिखा सकती हूँ
चाँद निकले तो घूँघटा उठा दूंगी मैं ।

मैं नदी हूँ, किनारा तोड़ सकती हूँ
बहती धारा का मुख मोड़ सकती हूँ,
जी चाहे तो सागर से मिल लूंगी मैं
जी चाहे तो रास्ता छोड़ सकती हूँ ।

न मैं सीता जिसे कोई राम त्याग दे
न मैं द्रोपदी जिसे दाव में हार दे
न मैं राधा जिसे न ब्याहे कृष्ण
मैं हूँ मीरा जो प्रेम का दान दे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं धरा हूँ, मैं जननी, मैं हूँ उर्वरा
मेरे आँचल में ममता का सागर भरा,
मेरी गोदी में सब सुख की नदियां भरी
मेरे नयनों से स्नेह का ही सावन झरा ।

दया मैं, क्षमा मैं, हूँ ब्रह्मा सुता,
मैं हूँ नारी जिसे पूजते देवता ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संध्या वेला

नभ से धीरे धीरे उतरी,
श्याम सलोनी संध्या वेला ।

सिमट गई किरणें सूरज की
बन्द हुई पाँखें पंकज की,
तारक दीप जले अम्बर में
गुंजित राग हुए तरुवर में ।

विरही गाये गीत अकेला,
श्याम सलोनी संध्या वेला ।

लौट रही पंछी की टोली
मन्द-मन्द कोई बोलें बोली,
नीड़-नीड़ के खुले द्वार
झुकी-झुकी तरुओं की डार ।

बिछुड़े प्रेमी का अब मेला,
श्याम सलोनी संध्या वेला ।

सूरज का अनुराग निरूपम
संध्या का श्रृँगार है अनुपम,
सिंदूरी रंग चुनरी लहराई
निशी तारों से मांग सजाई ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंदा सोहे नया नवेला
श्याम सलोनी-संध्या वेला ।

पंथ निहारे खड़ी किनारे
बीच धार प्रिय नाम पुकारे,
लहर-लहर में उठता कंपन
माँझी के तन मन में सिहरन ।

सागर में लहरों का रेला,
श्याम सलोनी संध्या वेला ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन पर्यन्त

इच्छाओं का नहीं होता है अन्त
जीवन पर्यन्त

स्वाति शीत बूंद में ही
सीप पाती चिरानन्द,
कामना से हो विकल
भ्रमर ढूँढते सुगन्ध ।

अखिल प्रकृति ने चाहा होगा
चिर वसन्त-जीवन पर्यन्त ।

धूप से तपती धरा को
चाह होगी छाँव की,
चातकी की आँख ने
कामना की चाँद की ।

हर पवन ने चाहा होगा
कोई दिगन्त-जीवन पर्यन्त ।

इच्छा में उल्लास है
उन्माद है, विलास है,
प्रतिपल प्रति साँस में
पूर्णता की आस है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर नदी ने चाहा होगा
सागर अनन्त-जीवन पर्यन्त ।

इच्छा सृष्टि मूल है
सृजन का आधार है,
इच्छा मधुर स्रोत है
अजस्र अविरल धार है ।

इच्छा के साम्राज्य का होता नहीं
कोई युगन्त-जीवन पर्यन्त ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गली-गली

कित खोया मेरा हास सखि
मैं ढूँढा करती गली-गली ।

अधरों में था बसता जैसे
फूलों में पराग बसे,
नयनों से वो झाँके जैसे
झिलमिल कोई दीप जले ।

अब कैसे हो परिहास सखि
मैं पूछा करती गली-गली ।

मैं हँसती तो लगता कोई
कँगना खनके हौले-हौले,
सात सुरों के साज़ बजें
जब पायल छम-छम बोले ।

अब कुछ न आता रास सखि
मैं घूमा करती गली-गली ।

खिली धूप तो सोचा मैंने
किरणों में छिप आया होगा,
हुई रात तो सोचा मैंने
चाँद बना मुसकाया होगा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब कहाँ किया प्रवास सखि
मैं घूमा करती गली-गली ।

जंगल पर्वत ढूँढ लिये सब
ढूँढ लिया संसार,
आती-जाती ऋतुओं से भी
पूछा बारम्बार ।

अब क्षीण हुई हर आस सखि
मैं डोला करती गली-गली ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे भेजूं पाती

सखि री, कैसे भेजूं पाती रे ।

काले मेघा दूत हमारे
नयनन आन बसे वो रे,
आखर कागद अंसुयन भीजे
पलकन बाँध बंधे न रे ।

उड़ जा उड़ जा काले कागा
विरहन आज मनाती रे ।

सखि री, कैसे भेजूं पाती रे ।

प्यासा मनवा, प्यासी अंखियाँ
प्यासी तन की प्रीती रे,
दिवस तो बीते पंथ निहारन
रतियाँ किस विध बीती रे ।

ओ वासंती पवन सुहानी
काहे मुझे सताती रे ।

सखि री, किस विध भेजूं पाती रे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो न पाये प्रेम संदेसा
प्रियतम भूल न जाये रे,
तन की लागी सब कोई जाने
मनवा बोल न पाये रे ।

बैरन हो गई काली कोयल,
विरह राग सुनाती रे ।

सखि री, कैसे भेजूं पाती रे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भेंट

चलो हम सूरज के घर जायें
रोज़ हमें वो मिलने आता,
कभी तो हम भी मिलकर आयें
चलो न सूरज के घर जायें ।

तीज त्यौहारों में हर कोई
अपनों के घर जाता है,
उपहारों की मीठी डलिया
भेंट रूप ले जाता है ।

धरती की कुछ न्यारी चीजें
भर लें अपनी झोली,
प्रेम भरी भेंट की गगरी
क्या कभी किसी ने तोली ?

नदिया से मांगें कुछ लहरें
तरुवर से ठंडी छांव,
झरनों की झांझर छनकायें
घुंघरू बांधें पांव ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भंवरों से लें मीठी गुंजन
कोयल से मीठे गीत,
चन्दन छिटकें उपहारों पर
छिटकें मन की प्रीत ।

फूलों से लें भीनी खुशबु
बगिया से कोमल कलियां,
तितली से रंगों की पुड़िया
जुगनु की बाँधें लड़ियां ।

आज रात जब सूरज सोये
सब कर लें तैयारी,
प्रेम से सब सौगातें बाँधें
गठरी बाँधें न्यारी ।

ओढ़ घटा की नील ओढ़नी
पंछी से उड़ जायें ,
चँदा की इक नाव बनायें
नभ सागर तर जायें ।

भोर होने से पहले ही
हम पहुँचें उसके द्वार,
आँख खुले जब सूरज की
तो भेंट करें उपहार ।

गले लगें तपते सूरज के
कुछ तो ठंडक दे दें,
रंग भरी गगरी छलकायें
सावन की होली खेलें ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युगों युगों से तपता सूरज
तन अपना पिघलाता,
बदले में न माँगे कुछ भी
अदभुत रीत निभाता ।

जीवन में इक बार कभी तो
थोड़ा कुछ कर पायें,
जीवन दाता ज्योति पुंज का
कुछ तो ऋण चुकतायें ।

चलो हम सूरज के घर जायें ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताप

मेरी पीड़ा का गहन ताप
तुम पलभर न सह पाओगे,
पलकों का किनारा टूटा तो
तिनके-सा बह जाओगे ।

माना तुम इक पर्वत से
अटल, अडिग हिमवान हुए,
क्षण भर के मेरे कंपन से
टूट-टूट गिर जाओगे ।

गहन अँधेरा हर सकने का
सूरज-सा अभिमान तुझे,
घोर घटा बन जाऊँ तो
पल-भर में छिप जाओगे ।

अन्तर मन के सागर में
कैसा इक तूफान छिपा,
अधर सिले खुल जायें तो
निश्वासों में मिट जाओगे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काहे मुझसे रूठ गया

मैंने अपने 'कल' से पूछा
काहे मुझसे रूठ गया ?

अब तक मेरे संग चला था
कब तू पीछे छूट गया ?

दुनिया जोड़े माणक मोती
मैंने तुमको जोड़ा था,
आँचल की गठरी में बाँधा
मन के घर में छोड़ा था ।

बीते कल की संचित निधियाँ
कौन आकर लूट गया ?
तू काहे मुझसे रूठ गया ?

मीठी यादों के गलियारे
मैं भी तेरे संग चली
संग चले सब सगे स्नेही
सुख-दुःख की मैं गोद पली ।

सुन्दर स्नेहिल सपनों का घट
शीशे-सा क्यों टूट गया ?
तू काहे मुझसे रूठ गया ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यादों की डलिया से अपने
बिखरे कल की कलियाँ बीनूं,
पल छिन नयना बरसें मोरे
अँसुयन की रिमझिम से भीगूं।

मन की डाली फूल खिला जो,
अनजाने ही सूख गया ।
तू काहे मुझसे रूठ गया ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

याचना

वायु के शीतल झोंकों से
तुम आते-जाते रहना,
प्यार की रिमझिम बूंदों का
सावन बरसाते रहना ।

जीवन की यह सांझ मेरी
चुपचाप कहीं न खो जाए,
पूनम के दमकते चँदा से
तुम आते-जाते रहना ।

दरिया की तूफ़ानी लहरों में
कश्ती का खेना है मुश्किल,
आशायों की पतवार लिये
तुम आते-जाते रहना ।

पतझड़ के सूखे पत्तों संग
हम भी न उड़ जायें कहीं,
सतरंगी बहार लिए ।
तुम आते-जाते रहना ।

यादों का समन्दर उमड़ चला
अँखियों के किनारे टूट गए,
प्रीत के बंधन बाँध लिए
तुम आते-जाते रहना ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीला-नीला आसमां

नीला-नीला आसमां है,
भीगी-भीगी हर दिशा
खो गया है कौन तेरा,
कौन वो मुझको बता ?

याद करती हैं किसे
यह पर्वतों की चोटियाँ,
ढूंढती फिरती किसे
यह पंछियों की टोलियाँ ।

गूँजती है हर दिशा
आवाज़ दे किसको सदा,
खो गया है कौन तेरा
कौन वो मुझको बता ?

कौन तेरी चूड़ियों में
रात भर जगता रहा,
कौन तेरी कल्पना में
चाँद-सा हँसता रहा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूछ लो बहार से
वो जानती उसका पता,
खो गया है कौन तेरा
कौन वो मुझको बता ?

नयन में स्वप्न-सा
छलता रहा, है कौन वो ?
अधर पे गीत सा
सजता रहा, है कौन वो ?

अर्चना की आरती में
दीप बन जो जला,
खो गया है कौन तेरा
कौन वो मुझको बता ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोटी सी दुनिया

पल-पल छोटी होती जाती
मेरी यह छोटी सी दुनिया ।

सम्बन्धों के अनगिन तारे
इक-इक करते मिटते जाते,
महाकाल की गहन गुहा के
अँधियारों में छिपते जाते ।

उन धुँधली-धुँधली यादों से
भीगी रहती मेरी दुनिया ।

कहीं तो होगा उनका वास
अपनों को जो छोड़ चले,
नियति की डोरी से बंध कर
जग से नाता तोड़ चले ।

माला की बिखरी, वो लड़ियाँ
जोड़ा करती मेरी दुनिया ।

विधि का लेखा अनमिट रेखा
काहे अंखियाँ बरस रही,
अम्बर के तारों में कोई
मूरत ढूँढे तरस रही ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डाली से झरते फूलों से
आँचल भरती मेरी दुनिया।

पतझर की सूखी डाली से
मन की पीड़ा पूछ रही,
अपनों के खो जाने से तू
कैसे पल-पल जूझ रही ?

नव अंकुर की आस में जीती
मेरे आँगन की यह दुनिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपने

कभी-कभी क्यों लगता जैसे
सपने टूटा करते हैं,
मुरझाए पुष्पों की पाँखों से
झरते और बिखरते हैं ।

फिर भी मन क्यों बुनता रहता
सुख सपनों के इन्द्र जाल,
इच्छायों के पंख लगा वो
वेधा करता देश और काल ।

अवचेतन मन की परतों में
कोई इच्छा ऐसी रहती होगी,
अपूर्ण रहती चेतनता में
सपनों में पूरित होती होगी ।

सुख सपनों के उपवन में जा
मन को धीरज होता होगा,
पल दो पल भर ही क्यों न
वो थोड़ा खुश तो होता होगा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर मुरझायें, बिखरें तो क्या
फूल नहीं बन्द होते खिलना,
रोज सुबह ढक देता सूरज
क्या तारे भूलें रात चमकना ?

झरते फूलों की पाँखों संग
बीज कई बिखर जाते हैं,
धरती की गोदी में पलकर
जन्म नया फिर पा जाते हैं ।

इन्द्र धनुष के रंगों जैसे
सपने तुम भी बुन कर देखो,
जीवन की बगिया में खिलती
नव कलियों को चुनकर देखो ।

सपनों को पास बुलायोगे तो
सच्च होने की आस करोगे,
फिर पूरित हों या रहें अधूरे
कुछ पल तो उनको जी लोगे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकाकी बादल

नील गगन में तैर रहा
एकाकी बादल सावन का ।

भारी मन, भारी था तन
नयनों में भारी पीर छिपा,
न बोले, न रिमझिम बरसे
गुम सुम अपनी राह चला ।

कैसा बोझ उठाये फिरता
बोझिल बादल सावन का ।

ताल-तलैया के नयनों में
अनमिट तेरी प्यास जगी,
कुम्हलाई कलियों के तन में
नेह झड़ी की आस लगी ।

बूंदों को क्यों बांधे रखता
निर्मोही बादल सावन का ?

पवन सखा-सा संग संग उड़ता
उसको अपनी पीर बता,
जित चाहे ले जाये तुझको
मन में क्या है बात जता ।

नभ में किसको ढूँढा करता
वैरागी बादल सावन का ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृतियाँ

इन अँखियों में सूरत प्यारी
फिर फिर लौट के आती है,

ऐ मेरे देस की धरती
तू याद बहुत ही आती है ।

सौंधी सौंधी खुश्बु तेरी
इन साँसो में बसती,
परवासी के नयनों में तू
दुल्हन जैसी सजती ।

सतरंगी चुनरी लहराये
सपनों में तू आती है ।
तू याद बहुत ही आती है ।

कल-कल करती नदियों में मैं
ममता तेरी ढूँढा करती,
झिलझिल करते तारों से मैं
हाल तुम्हारा पूछा करती ।

पंछी की कोई टोली जब
पूरब से उड़कर आती है ।
तेरी याद बहुत ही आती है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे भूलूँ जंगल पर्वत
कैसे भूलूँ नदियाँ,
सखियों-सी वो जूही चम्पा
केसर की वो कलियां ।

घर आँगन की बगिया में
जब कली कोई मुस्काती है ।
तू याद बहुत ही आती है ।

इच्छाओं के पंख जो होते
रोज़ तुम्हें मैं मिलने आती,
तेरे आँचल की छैयाँ में
चिर सुख की दो घड़ियाँ पाती ।

एकाकी कोई मेरे जैसी
कोयल जब भी गाती है ।
तेरी याद बहुत ही आती है ।

लौट तुम्हारे पास जो आऊँ
बाहों में भर लेना,
आशीषों की झोली भर इस
परदेसन को दे देना ।

उस पल की वो मीठी सिहरन
नई उमंग जगाती है ।
तू याद बहुत ही आती है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोज सुबह पूजा अर्चन में
माँगू इक वरदान,
देस मेरे को ईश्वर मेरे
देना सुख का दान ।

पश्चिम की जब चंचल वायु
पूरब को छू कर आती है,
ऐ मेरे देस की धरती
तू याद बहुत ही आती है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यादों के गलियारे

यादों के गलियारे में जब-
जब झांक के देखा मैंने,

सुख-दुःख के अनगिन दीपों को
जलते बुझते देखा मैंने ।

अम्बर के झिलमिल तारों में
मैं रूठे सपने ढूँढ रही;
सागर की आकुल लहरों-सी
आशायें मेरी जूझ रही ।

घन सावन की आस लिये
धरती को तपते देखा मैंने ।

धूप छाँव की आँख मिचौनी
हर पल जीवन संग रही,
पीड़ा कोमल अमर बेल-सी
देह तरु संग पली बढ़ी,

सुख की कलियाँ चुनते चुनते,
काँटों को भी झेला मैंने ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूलूं सब बीते का लेष
कोई ऐसी राह सुझाए,
प्रतिपल जलती रहती उर में
क्षण भर ही, कोई ज्वाल बुझाए ।

पलकों पे जो स्वप्न पले
अश्रु में ढलते देखा मैंने ।

सुख-दुःख के अनगिन दीपों को
जलते बुझते देखा मैंने ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस पार

जाना है उस पार
ओ राही, जाना है उस पार ।

न जाते संग रिश्ते नाते
न कोई संगी साथी,
न पंहुचे कोई प्रेम संदेशे
न चिट्ठी न पाती ।

चार दिनों का मेला यह जग
अस्थिर सब संसार,
जाना है उस पार ।

एकाकी तू आया जग में
एकाकी ही जाना,
कौन देश से आया पंछी
कौन रूप अपनाना ?

जो जन्मा वो जाता, यही-
जगति का व्यवहार,
जाना है उस पार ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सागर की लहरों सा जीवन
मिलना और बिछुड़ना,
कहां ले गया हवा का झोंका
सूखे पात सा उड़ना ।

आज मिले फिर कहां मिलें ?
कित ले जाए नदिया धार,
जाना है उस पार ।

जिस अनन्त का लघु कण है तू
वो अजन्मा, अजाना,
जग के कण कण में बसता
तूने न पहचाना ।

जो आदि वो अन्त जीवन का
वो ही मुक्ति का आधार ।

जाना है उस पार,
ओ राही, जाना है उस पार ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिकार

हां, मैं उदास हूँ आज, क्योंकि-
कुछ तो है अधिकार मुझे ।

किसने पूछा धीर धरा से
कभी-कभी क्यों काँपा करती,
अन्तर्मन में ज्वाल छिपा क्यों-
जलती और सिसकती ।

मैं भी सिसकूँ आज, क्योंकि-
कुछ तो है अधिकार मुझे ।

नील गगन भी कभी-कभी
किरणों की लौ खो देता है,
आहत होगा हृदय तभी तो
बरस बरस यूं रो लेता है ।

मैं भी रो लूं आज, क्योंकि-
कुछ तो है अधिकार मुझे ।

अँखियों के द्वारे बन्द करुँ
और अन्तर्मन से पूछूँ-आज,
कौन ले गया हास अधर से
मनवा क्यों चाहे बनवास ।

मैं सब से पूछूँ आज, क्योंकि
कुछ तो है अधिकार मुझे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चन्द्र किरण

चन्द्र किरण-सी चंचल गोरी
मोरे मन को भाये ।

चन्दा के दर्पण में मोहक
मुख देखे शरमाये ।

निशि तारों का झिलमिल आँचल
रूप तेरा निखारे,
बदली की झीनी ओट से चंदा
छुप-छुप तुझे निहारे ।

झील-सी नीली आँखों में तू
पंकज-सी खिल जाये ।

मिश्री-मिश्रित बतियां तोरी
कानों में रस घोलें,
कुहक-कुहक कर बन की कोयल
तेरी बोली बोले ।

तू बोले या घुंघरु छनकें
कौन हमें बतलाये ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बगिया के फूलों में गोरी
तू हँसती मुसकाती
डार-डार और पात-पात पर,
तितली बन इठलाती

मन भावन यह खुशबु तेरी
प्राणों में बस जाये,
चन्दा के दर्पण में मोहक
मुख देखे शरमाये ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किस राह पे चली

ज़िन्दगी, ऐ ज़िन्दगी
किस राह पे चली ?

बादलों के पंख बाँध
पंछियों-सी उड़ चली,
चन्द्रमा की नाव पर
बीच धार बह चली ।

दीप तारों के जला
किसको ढूंढने चली ?

अंग-अंग में उमंग
श्वास में पराग गंध,
अधर पे मृदुगान है
नयन में हैं, सात रंग ।

बसंत के उल्लास में
कली-कली-सी खिल चली ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धूप तेरे द्वार पर
पुष्प माल ले खड़ी,
चन्द्र रश्मियाँ तेरी
माँग में आ सजीं ।

सीप के अधर में तू
बूंद मोती-सी पली

ज़िन्दगी, ऐ ज़िन्दगी ।
किस राह पे चली !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साँझ के साये

धीमे-धीमे आये धरा पे
घने-घनेरे साँझ के साये ।

पर्वत के शिखरों पर कुछ पल
ध्यान मग्न बैठे सुसतायें,
शाख-शाख से लिपटें जैसे
जन्मों की चिर प्यास बुझायें ।

धरती से मिलने को आतुर,
श्याम, सलोने सांझ के साये ।

धुंधलाई-सी सूर्य किरण का
पलभर थम जाता प्रस्थान,
अस्ता-चल, पर बैठा सूरज
रोक रहा अपना अवसान ।

गोधूली के संग-संग उड़ते,
धुँधले-धुँधले साँझ के साये ।

नीले अम्बर की थाली में
संध्या वन्दन दीप जला,
तारक माला लेकर चन्दा
अनगिन ले उपहार चला।

लहर-लहर पे झूमें गायें
सुरमयी तन, साँझ के साये ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्तर्द्वन्द्व

बहुत बार फूलों से मैंने
पखुड़ियों को झरते देखा,
फिर पौधे की उस डाली पर
नव कलियों को हसते देखा।

बहुत बार अम्बर से मैंने
निशी तारों को गिरते देखा,
फिर उस नीले आंगन में
दीप नया इक जलते देखा।

बहुत बार सागर को मैंने
मौन तपस्या करते देखा,
फिर उन तापस लहरों को
तूफानों से लड़ते देखा।

बहुत बार यह सोचा मैंने
यादों की इक गठरी बाँधूं,
मन की गहरी परतों में
चुपचाप कहीं वह जाकर रखूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत बार फिर यह भी सोचा
तन से सारे काँटे बीनूँ,
जीवन की बगिया से केवल
कुछ मुस्काते फूल चुनूँ ।

मिल न पाया अब तक मुझको
क्यों उसकी ही चाह करूँ,
झोली में जो पाया अब तक
क्यों न उसकी बात करूँ ।

बहुत बार मन को समझाया
क्यों न तुम तापस हो जाओ,
हँस कर मन कहता फिर मुझसे
मृग तृष्णा का जाल हटाओ ।

कल के सपने, आज की पीड़ा
दोनों का ही पलड़ा भारी,
मन तराजू थामे बैठा
मन के हाथ ही बात है सारी ।

कठपुतली सा जीवन मेरा
किसके हाथ है डोर,
नियति बाँध पिटारी बैठी
जाने कब ले खोल ।

इक बार कभी यूं चलते चलते
जीवन में भावी मिल जाये,
पूछूँ उसकी बाहँ पकड़ के
क्यों तू ऐसे खेल खिलाये ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां का आंगन

कैसे भूलूं मां का आंगन
बाबुल की वो देहरी रे ।
कैसे भूलूं रे ।

ममता की वो बगिया प्यारी
मां गोद हमारी रे,
चुन-चुन कलियां झोली भरती
आंचल में फुलवारी रे ।

कैसे भूलूं कोमल बंधन,
कैसे भूलूं रे ।

तुलसी, गेंदा, चम्पा, जूही
आंगन तेरा सजाये रे,
अम्बुआ की डाली पे बैठी
कोयल गीत सुनाये रे ।

कैसे भूलूं मीठी गुंजन,
कैसे भूलूं रे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उड़ते पंछी, बहती नदिया
मुझको पास बुलाये रे,
बांह पसारे पेड़ की डाली
मां की याद दिलाये रे ।

कैसे भूलूं हंसता मधुवन,
कैसे भूलूं रे ।

सूरज चंदा झिलमिल तारे
अंगना में मुसकाये रे,
शीतल मंद पवन के झोंके
निंदिया लेकर आये रे ।

कैसे भूलूं प्यारा बचपन
कैसे भूलूं रे ।

ओ वासंती पवन सुहानी
मां को छू कर आई रे ?
बाबुल की अंखियों का पानी
क्या तू पोंछ के आई रे ?

कैसे भूलूं नेह का सावन
कैसे भूलूं रे ।

आंगन की यादों को मैंने
इस आंचल में बांध लिया,
बाबुल की देहरी को मैंने
फूलों जैसे टांक लिया ।

कैसे भूलूं जोड़ी पावन
कैसे भूलूं रे ?
कैसे भूलूं रे ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवासी सुर

मैं प्रवासी हुई सखि
है देस मेरा अति दूर !

यहां न मिलती पीपल छैयां
न बाबुल की गलियां,
यहां न वो चौपाल चोबारे
न चम्पा की कलियां ।

कभी न देखी गैया मैया
न कोई मोर चकोर,
न कोई देखी उड़ती तितली
न अम्बुआ पे बौर ।

कहां रह गई बंसी की धुन
कहां वो ढोल मंजीरे,
कुह कुह करती कोयल के सुर
छूटे यमुना तीरे ।

मेरी प्यासी अंखियाँ ढूँढें
नभ में कोई पतंग ,
फाल्गुन भी रूठा सा लगता
बिन होली के रंग ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कान मेरे मंदिर की घंटी
सुनने को नित तरसें,
याद करूं जब गंगा का तट
छम-छम नैना बरसें ।

नभ में देखूं चँदा सूरज
बेगाने क्यों लगते,
न देखा कोई उड़ता पंछी
क्यों इतने वो डरते ।

समय यहाँ यूँ भागा रहता
हर कोई पीछे भागे,
लगता जैसे यहां की घड़ियाँ
समय से चलती आगे ।

बन्द भवनों की बन्द हवा में
घुटा-घुटा मन रहता,
न छू ले पुरवाई तन तो
बुझा-बुझा तन रहता ।

वृक्ष से टूटे डाली जब तो
थोड़ा तो मुरझाती,
देश मेरा भी छूटा मुझसे
पल पल याद सताती ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छूटा मुझसे मेरा कल
आने वाला दे आवाज़,
सेतु बन के जोड़ रहा अब
स्वपन सुनहरा मेरा आज ।

कोई कहे प्रवासी मुझको
कोई कहे अनिवासी,
कितने भी उपनाम हों मेरे
मैं तो केवल भारतवासी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम

पुष्प में सुगंध-सा,
प्राण में उमंग-सा,
ताल में तरंग में,
दिशा-दिशा को रंग में,
रंगे जो वही प्रेम है ।

नयन में जले दीप-सा,
अधर पे पले गीत-सा,
चातकी की प्रीत-सा,
श्वास में संगीत-सा,
सजे जो वही प्रेम है ।

पंछियों की कूज में,
बाँसुरी की गूंज में,
नुपूर की झंकार में,
सावनी फुहार में,
झरे जो वही प्रेम है ।

गीत में, ताल में,
पुष्प गुन्थित माल में,
उषा के अरूण हास में,
वसन्त के विलास में,
लसे जो वही प्रेम है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न रूप न आकार है ,
अदृश्य निराकार है,
अविरल जीवन स्रोत सा,
उपासना की ज्योत सा,
जले जो वही प्रेम है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शत-शत प्रणाम

पर्वतों से बुलंद हैं हौंसले जिनके,
चट्टानों से दृढ़ हैं संकल्प जिनके ।

भारत के उन वीर जवानों को
जनमानस का शत-शत प्रणाम् ।

बर्फाली हवाओं को चीरते बदन इनके,
दुर्गम पर्वतों पर दौड़ते चरण इनके,
दुश्मन की ताक में लगे नयन इनके,
देश रक्षा में हैं बलिदान प्राण जिनके ।

भारत के उन वीर जवानों को
जनमानस का शत-शत प्रणाम ।

तिरंगे की शान में है शान इनकी,
सजग प्रहरी की है पहचान इनकी,
युद्धभूमि ही है कर्मभूमि जिनकी,
मातृभूमि ही माँ की गोद जिनकी ।

भारत के उन वीर जवानों को
जनमानस का शत-शत प्रणाम ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पग-पग पर शत्रु का संहार करें,
भारत माँ की जय-जयकार करें,
वीर अभिमन्यु से यह रणबाँकुरे,
निर्भय हो हर चक्रव्यूह पार करें ।

भारत के उन वीर जवानों को
जनमानस का शत-शत प्रणाम ।

रक्त कण से सरहदें सींचते जाते,
रणघोष से मंजिलें जीतते जाते,
हर गोली को हँसते-झेलते जाते,
दुश्मन के सीने को भेदते जाते ।

भारत के उन वीर जवानों को
जन-मानस का शत-शत प्रणाम ।

सीमा के सजग प्रहरी वीरो !
मा की आन तुम्हारे हाथ है
हम याद दिलाएँ फिर तुमको,
पूरा यह देश तुम्हारे साथ है ।

ऐ भारत के वीर जवानों तुमको
जनमानस का शत-शत प्रणाम ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तार से तार मिला लें

आओ प्यार का साज़ बजा लें !
सात सुरों की लहरी गूंजे,
तार से तार मिला लें ।

बहुत चली आतंक की आँधी
विनाश के अंकुर फूटे,
स्नेह प्यार के रिश्ते टूटे,
भाई-भाई से रूठे ।

आओ टूटे बंधन जोड़ें,
अमन के दीप जला लें ।

लड़ना है तो लड़ें भूख से
अत्याचार मिटाएँ,
मानवता का पाठ पढ़ा कर,
जग को राह दिखाएँ ।

आओ इक जुट होकर हम सब,
द्वेष की आग बुझा लें ।

धरती पर्वत को कब किसने
सीमायों में बाँधा,
सागर नदिया की धारा ने
सब विघ्नों को लाँघा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आओ बाँधे प्रेम की लड़ियाँ
बंधन बार सजा लें ।

एक ही धरती, एक ही अम्बर
एक ही सूरज चाँद
पूरब पश्चिम, उत्तर दक्षिण
एक ही सब में प्राण

आओ बीजें स्नेह के अंकुर
धरती स्वर्ग बना लें ।

तार से तार मिला लें ।
अमन के दीप जला लें ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रीत तेरी

प्रीत तेरी-
तारों से जड़ी
यू साँझ ढली
बगिया में खिली
जूही की कली
उमंग भरी
यूं हिरणी चली
मन्दिर मे कोई
ज्योत जली
मोती की लड़ी सी-
प्रीत तेरी ।

याद तेरी-
अम्बर में यूं
मेघ घिरे
ओस कणों में
नेह झरे
भोर किरण यूं
पाँव धरे
नयनों में मृदु
स्वप्न पले
सावन की झड़ी सी-
याद तेरी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शशि पाधा जम्मू में जन्मी शशि पाधा बाल्यकाल से ही साहित्य सृजन में संलग्न रहीं। इन्होंने जम्मू कश्मीर विश्व-विद्यालय से हिंदी तथा संस्कृत में एम.ए. और बी.एड की शिक्षा ग्रहण की। सन् 1968 में इन्हें 'ऑल राउंड बेस्ट वीमेन ग्रेजुयेट' के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1967 में सितार वादन प्रतियोगिता में जम्मू कश्मीर राज्य के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित हुईं। इन्होंने आकाशवाणी जम्मू के नाटक, वाद-विवाद, परिचर्चा, काव्य-पाठ तथा कहानी आदि विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं। इन्होंने देश-विदेश में कई काव्य गोष्ठियों में भाग लिया। इनकी रचनाओं को संगीत-बद्ध करके अनूप जलोटा एवं अन्य गायकों ने विभिन्न संगीत-सभाओं में गाया।

इन्होंने अमेरिका के नार्थ केरोलाइना राज्य के विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा का अध्यापन कार्य किया। अमेरिका से प्रकाशित महिला कवयित्रियों के रचना संग्रह 'प्रवासिनी के बोल' एवं केनेडा की त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दी चेतना' में रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

सन् 2002 में इनका प्रथम काव्य संग्रह 'पहली किरण' प्रकाशित हुआ।

संप्रति अपने परिवार के साथ मेरीलैंड (अमेरिका) में रहते हुए साहित्य सृजन में संलग्न हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन, प्रेम एवं प्रकृति को विभिन्न रंगों से चित्रित करती हुई कवयित्री शशि पाधा ने 'मानस मंथन' संग्रह में मानव जीवन के राग-विराग हर्ष-शोक, ममता एवं प्रवास की पीड़ा के भावों-मनोभावों को अपनी कल्पना की तूलिका से मूर्त्त रूप किया है । उनकी रचनाएँ जीवन, धरती, स्वप्न तथा सर्जना के प्रेम की गाथाएं हैं ।

–अभिमन्यु शर्मा, *दैनिक जागरण*

प्रेम की भावना से ओत-प्रोत कवयित्री शशि पाधा के रचना संग्रह मानस-मंथन में मानवीय संवेदना एवं प्राकृतिक सुषमा का अद्भुत सम्मिश्रण है । गीतों के रंग में रंगी उनकी कल्पना में कहीं राग की कोमल अनुभूतियां हैं और कहीं विराग की ओर संकेत । एकदम निजी एवं अन्तरंग को व्यक्त करती हुई उनकी रचनाएं प्रत्येक संवेदनशील हृदय को गहराई तक छूती हैं और उनमें पाठक को अपनी अनुभूतियों के दर्शन होते हैं । पुस्तक का पठन एक सुखद मानस यात्रा है ।

सुरेन्द्र सागर, *कश्मीर टाईम्स*

प्रस्तुत संकलन में संग्रहीत कविताएं परम्परा और आधुनिकता का सुंदर संगम प्रस्तुत करती हैं। कोमल भावों और प्रखर विचारों पर आश्रित यह कविताएं एक भिन्न प्रकार की आनंदानुभूति का आस्वादन करवाती हैं । काव्यात्मक रसानुभूति से ओत-प्रोत इन कविताओं की सादगी इनकी विशिष्टता बन जाती है । भोगे हुए जीवन के यथार्थ को रूपायित करने की अद्भुत क्षमता कवयित्री की लेखनी से परिलक्षित होती है । निश्चय ही अपनी धरती से जुड़ाव की उत्कण्ठा के कारण ऐसा संभव हुआ है । कवयित्री का भावगत उजास उसे वैचारिक सम्पन्नता प्रदान करता है । राष्ट्रभाषा हिन्दी में यह परिपक्व प्रयास बधाई का हकदार है ।

ओम गोस्वामी, *पूर्व महासचिव*
जे एण्ड के अकैदमी आफ आर्ट कल्चर एण्ड लैंग्वजज़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant